

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Thursday, 24 September 2026

गहने गिरवी, फिर अकेले निकलीं... रोहिणी प्रकाश पाटिल की मधुमक्खी पालन से सालाना 25 लाख की कमाई

Publisher

Published on 07 Oct 2025



महाराष्ट्र के सतारा जिले के सुलेवाड़ी गांव की रहने वाली रोहिणी प्रकाश पाटिल ने अपनी मेहनत और साहस से साबित कर दिया है कि आत्मनिर्भर बनने का रास्ता हर परिस्थिति में खोजा जा सकता है। परिवार और खेतों के कामों में व्यस्त रहने के बावजूद रोहिणी ने अपनी किस्मत को बदलने का फैसला किया और आज वह मधुमक्खी पालन के जरिए सालाना 25 लाख रुपये से अधिक की कमाई कर रही हैं। उनकी यह सफलता न केवल उनके जीवन को बदलने में मददगार साबित हुई है, बल्कि उनके गांव की अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन गई है।

रोहिणी ने अपने संघर्ष के शुरुआती दिनों में कई कठिनाइयों का सामना किया। परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं थी कि वह बड़े निवेश कर सकें। इस कारण से उन्होंने अपने गहने गिरवी रखे और छोटे पैमाने पर मधुमक्खी पालन शुरू किया। शुरुआत में उन्हें कई बार असफलताओं का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और लगातार सीखती रहीं।

उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि एक सीखने का अनुभव था। उन्होंने पास के कृषि विज्ञान केंद्र और स्थानीय स्वयं सहायता समूहों की मदद से तकनीकी ज्ञान प्राप्त किया। रोहिणी ने अपने छोटे से उपवन और खेत में मधुमक्खियों की कॉलोनी स्थापित की और धीरे-धीरे उत्पादन बढ़ाना शुरू किया।

रोहिणी की मेहनत रंग लाई। आज उनके पास 200 से अधिक मधुमक्खी के पिंजरे हैं और उनका शहद पूरे जिले में मांग में है। शहद के अलावा वह मधुमक्खियों से संबंधित उत्पाद जैसे मोम और अन्य प्राकृतिक उत्पाद भी बेचती हैं, जिससे उनकी आय और बढ़ी है। उन्होंने अपने उत्पादों के लिए सोशल मीडिया और स्थानीय बाजार दोनों का सहारा लिया।

रोहिणी की कहानी सिर्फ आर्थिक सफलता तक सीमित नहीं है। उन्होंने अपने गांव की अन्य महिलाओं को भी प्रोत्साहित किया। अब गांव की कई महिलाएं उनके मार्गदर्शन में मधुमक्खी पालन में लगी हैं। रोहिणी नियमित रूप से महिलाओं को प्रशिक्षण देती हैं,

ताकि वे भी आत्मनिर्भर बन सकें और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकें ।

विशेषज्ञों का मानना है कि रोहिणी की यह सफलता ग्रामीण उद्यमिता और महिला सशक्तिकरण का आदर्श उदाहरण है । उन्होंने दिखाया है कि सही दिशा, मेहनत और धैर्य से कोई भी महिला अपने जीवन में बड़ा बदलाव ला सकती है । उनका यह मॉडल पूरे महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकता है ।

गांव के लोग भी रोहिणी की सफलता से प्रभावित हैं । उन्होंने कहा कि “पहले रोहिणी केवल घर और खेत के कामों में व्यस्त थीं, लेकिन अब उन्होंने साबित कर दिया कि मेहनत और आत्मविश्वास से किसी भी चुनौती को पार किया जा सकता है । उनकी कहानी हर महिला को प्रोत्साहित करती है कि वह अपने पैरों पर खड़ी हो । ”

इसके अलावा, रोहिणी ने यह भी बताया कि मधुमक्खी पालन केवल आय का साधन नहीं है, बल्कि यह **पर्यावरण संरक्षण** में भी मदद करता है । मधुमक्खियों के परागण से कृषि उत्पादन में सुधार होता है और प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है । इस प्रकार उनके व्यवसाय का समाज और पर्यावरण पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है ।

रोहिणी का यह सफर यह संदेश देता है कि जब महिला अपनी मेहनत और साहस के साथ कदम बढ़ाती है, तो कोई भी आर्थिक या सामाजिक बाधा उसे रोक नहीं सकती । उन्होंने दिखाया कि कैसे छोटे स्तर से शुरुआत करके बड़े स्तर पर सफलता हासिल की जा सकती है ।

आज रोहिणी प्रकाश पाटिल न केवल सतारा जिले की एक सफल महिला उद्यमी बन गई हैं, बल्कि उन्होंने अपने गांव की महिलाओं के लिए भी प्रेरणा का नया अध्याय लिखा है । उनकी कहानी यह साबित करती है कि अगर इच्छाशक्ति मजबूत हो, तो कोई भी सपना असंभव नहीं है ।

गांव में अब महिलाएं रोहिणी के मार्गदर्शन में अपने स्वयं के छोटे व्यवसाय शुरू कर रही हैं । उनका उदाहरण यह दिखाता है कि महिला सशक्तिकरण केवल शब्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कार्य और आर्थिक स्वतंत्रता के माध्यम से वास्तविक रूप में संभव है ।

सतारा जिले के अधिकारियों ने भी रोहिणी की सफलता को सराहा है और ग्रामीण महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने के लिए स्थानीय कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बनाई है । इस तरह रोहिणी प्रकाश पाटिल की कहानी केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं है, बल्कि पूरे समुदाय के विकास और सशक्तिकरण की मिसाल बन गई है ।

अंततः रोहिणी की कहानी हमें यह सिखाती है कि **साहस, धैर्य और सही मार्गदर्शन** के साथ किसी भी महिला को अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति सुधारने में कोई बाधा रोक नहीं सकती । उनका मधुमक्खी पालन का व्यवसाय अब सिर्फ आर्थिक लाभ का साधन नहीं, बल्कि ग्रामीण महिला सशक्तिकरण का प्रतीक बन चुका है ।